माननीय राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय के कार्यक्रम में उद्बोधन

स्थान :- भोपाल, **दिनांक:- 6 जून, 2013 समय :- दोपहर एक बजे**

e[; vfrfFk Hkkjr d jk"Vifr ekuuh;

Jh i.ko e[kth th]

in'k d e[;e=h Jh f'kojkt flg pkgku th]

Jh y{ehdkr 'kek e=h] rduhdh f'k{kk foHkkx]

Jh lj'k ipkjh io dUnh; e=h

Jh idt jkx] lfpo lLdfr foHkkx

vkef=r fof'k"V vfrfFkx.k rFkk

lekjkg e mifLFkr vfrfFkx.k]

i=dkj cU/k ,o

vkef=r ic) ukxfjdx.k A

मैं माननीय राष्ट्रपति जी का मध्यप्रदेश की जनजातियों की विविधवर्णी संस्कृति और चकित कर देने वाली विलक्षण परम्पराओं की सम्मोहक दुनिया में स्वागत करता हूं।

जनजातीय समाज के लोगों की संगठनात्मक और संरचनात्मक शक्ति सांस्कृतिक परम्परायें प्रथाएं और मान्यताएं अद्वितीय हैं। मध्यप्रदेश में अन्य राज्यों की तुलना में जनजातियों की आबादी अधिक है। यहां निवासरत भील और कोल आदि जनजातियों का उल्लेख रामायण और महाभारत जैसे प्राचीन भारतीय ग्रंथों में भी मिलता है। रामायण की शबरी और महाभारत के भील- कुमार एकलव्य भारतीय संस्कृति की पहचान हैं। यहां की अगरिया जनजाति लौह युग को प्रारम्भ करने वाली प्राचीन जनजातियों में से एक है। इन सबके रहन-सहन] पहनावे] खान-पान] बोलियों और रीति-रिवाजों में भिन्नता है। इसी भिन्नता के कारण मध्यप्रदेश राज्य की जनजातीय संस्कृति बहुरंगी और समृद्ध है।

जनजातीय समाज के लोगों का मेहनत से बहुत करीब का रिश्ता है। थकान मिटाने के लिए ये लोग गीत] संगीत] कला और शिल्प के कौशल का उपयोग करते हैं। आज के आधुनिक युग में भी समाज इनके हुनर को मानता है] और पसंद भी करता है। मध्यप्रदेश के जनजातीय शिल्पियों चित्रकारों] गायकों और नर्तकों ने विश्व स्तर पर प्रदेश का नाम रौशन किया है।

जनजातीय समाज के कलाकारों की इस उपलब्धि में मध्यप्रदेश सरकार और भारत सरकार का योगदान भी सराहनीय है। इन कलाकारों की कला को प्रोत्साहित किया गया है और इन्हें रोजगार तथा विकास के लिए सम्मानजनक अवसर उपलब्ध कराये गये हैं।

समाज के अन्य कला प्रेमियों को जनजातीय समाज के कलाकारों से अवश्य लाभान्वित होना चाहिए क्योंकि मानव जाति की सांस्कृतिक पहचान] परम्परागत कलाएं ही हैं। यही आगे चलकर प्रदेश और देश की सांस्कृतिक विशिष्टताओं को रेखांकित करती रहेंगी।

इसी क्रम में मध्यप्रदेश में समाज के इस हिस्से के लोगों की संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन के लिए किये जा रहे कार्य प्रशंसनीय हैं।

मध्यप्रदेश शासन के संस्कृति विभाग द्वारा आदिमजाति कल्याण विभाग के सहयोग से मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय की स्थापना की गई है। यह संग्रहालय "जनजातीय जीवन, देशज ज्ञान परम्परा और सौन्दर्यबोध" पर केन्द्रित है।

यहां प्रदर्शित प्राय: सभी प्रादर्श उत्कृष्ट कला का नमूना होने के साथ मूलत: जीवन के दैनिक कार्यकलापों से जुड़ी हुई उपयोग की वस्तुएँ हैं। चित्र या वाद्ययंत्र हैं] तो वे भी किसी अनुष्ठान का हिस्सा हैं और यदि शिल्प या मूर्ति है तो वह भी किसी देव] किसी अदृश्य शक्ति का आव्हान है। समूचा चराचर जगत इस अदृश्य शक्ति से आबद्ध है] इसलिए तो इन आदिवासी समाजों में ऐसा कुछ भी नहीं जो एक साथ ही लौकिक और आलौकिक न हो।

संग्रहालय में मध्यप्रदेश में निवासरत जनजातीय समूहों की कला] संस्कृति परम्परा और जीवन-उपयोगी शिल्पों] चित्रों और रहन-सहन तथा रीति-रिवाजों] को प्रदर्शित किया गया है। संग्रहालय में आने वाला दर्शक या शोधार्थी एक साथ पूरे प्रदेश की समृद्ध आदिवासी संस्कृति और कला परम्परा से परिचित हो सकेगा।

जनजातीय सांस्कृतिक परम्परा और सांस्कृतिक बोध समग्र और समेकित है। इसमें जीवन के आध्यात्मिक रूपों और अनुष्ठानों से लेकर देवधारणाओं और स्वरूपों तक] उपयोगी वस्तुओं से लेकर सौन्दर्यपरक रूपों की रचना तक संस्कृति बोध सक्रिय रहता है। कला अपने तात्विक रूपों में सांस्कृतिक परम्परा की अपनी विशिष्टता और समुदायों के रचने की अपनी क्षमता पर निर्भर करती है] जिसमें हर समुदाय की अपनी छाप रहती है।

एक बार पुन: विस्मित कर देने वाले इस जनजातीय सौन्दर्य-संसार में आपका पुन: स्वागत और अभिनंदन है।

जय हिन्द